ISSN: 2349-6002

ईशोपनिषद और शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म का स्वरूप: एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. तृप्ति एम. गजेरा
मददनीश प्राध्यापिका (दर्शनशास्त्र) धर्मेंद्रसिंहजी आर्ट्स कॉलेज , राजकोट
doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191134-459

सारांश (Abstract)- प्रस्तुत शोध-पत्र ईशोपनिषद तथा आचार्य शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त के आलोक में ब्रह्म के स्वरूप का तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। उपनिषद भारतीय दर्शन की तात्त्विक चेतना का सर्वोच्च उत्कर्ष हैं, जिनका उद्देश्य आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध कराना है। ईशोपनिषद, जो शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध है, ब्रह्म को ईश, सर्वव्यापक सत्ता के रूप में प्रस्तुत करते हुए कर्म और ज्ञान के समन्वय पर बल देता है। इसके विपरीत, शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त ब्रह्म को निर्गुण, निराकार, नित्य तथा एकमेव पारमार्थिक सत्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

इस अध्ययन में ईशोपनिषद के प्रमुख मंत्रों, शंकराचार्य के उपनिषद-भाष्य तथा अद्वैत वेदान्त के सिद्धांतों का विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि दोनों परंपराओं में ब्रह्म की व्याख्या में दार्शनिक ज़ोर का अंतर है, तथापि मूलभूत अद्वैत दृष्टि दोनों में समान रूप से विद्यमान है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ईशोपनिषद और शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त भारतीय दर्शन में ब्रह्म की अवधारणा को दार्शनिक गहराई, व्यापकता और समकालीन प्रासंगिकता प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): ईशोपनिषद, अद्वैत वेदान्त, शंकराचार्य, ब्रह्म, आत्मा, माया, कर्म-ज्ञान

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय दर्शन का केंद्रीय विषय परम सत्य की खोज और मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य–मोक्ष–की प्राप्ति है। वैदिक युग से ही ऋषियों ने इस प्रश्न पर विचार किया कि यह जगत किससे उत्पन्न हुआ है, किसमें स्थित है और किसमें लीन होता है। इसी खोज का परिणाम उपनिषदों के रूप में सामने आता है, जहाँ ब्रह्म को समस्त अस्तित्व का मूल कारण और चेतना का परम स्रोत माना गया है।

ईशोपनिषद उपनिषदिक परंपरा में विशेष स्थान रखता है क्योंकि यह ब्रह्म को केवल पारलौकिक सत्ता न मानकर, जीवन और कर्म से जोड़ता है। वहीं आचार्य शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त ब्रह्म को पूर्णतः पारमार्थिक, निर्गुण और निर्विशेष सत्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य इन दोनों परंपराओं में ब्रह्म के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा यह स्पष्ट करना है कि इनके बीच का अंतर विरोधात्मक न होकर दृष्टिकोणगत है।

2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

उपनिषदों और अद्वैत वेदान्त पर भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा व्यापक अध्ययन किया गया है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन उपनिषदों को भारतीय दर्शन की आत्मा मानते हैं।

सुरेन्द्रनाथ दासगुप्ता अद्वैत वेदान्त को भारतीय दर्शन की सर्वाधिक तर्कसंगत दार्शनिक प्रणाली बताते हैं।

हालाँकि, ईशोपनिषद और शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म की अवधारणा का विशेष तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है, जिससे इस शोध की अकादमिक प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

3. शोध की समस्या एवं उद्देश्य

3.1 शोध की समस्या

ईशोपनिषद ब्रह्म को ईश और कर्म-ज्ञान के समन्वय के रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि शंकराचार्य ब्रह्म को केवल ज्ञानगम्य पारमार्थिक सत्य मानते हैं। प्रश्न यह है कि क्या यह भिन्नता तात्त्विक है या व्यावहारिक स्तर की?

3.2 शोध के उद्देश्य

ईशोपनिषद में ब्रह्म के स्वरूप का विवेचन करना।

शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म की अवधारणा का विश्लेषण करना।

दोनों दृष्टियों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

4. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन ग्रंथाधारित, विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है।

प्राथमिक स्रोत–ईशोपनिषद, शंकराचार्य का भाष्य।

द्वितीयक स्रोत–आधुनिक विद्वानों के ग्रंथ और शोध-लेख।

5. ईशोपनिषद में ब्रह्म का स्वरूप

5.1 ईश की अवधारणा

ईशोपनिषद का प्रथम मंत्र–

“ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।”

ब्रह्म की सर्वव्यापकता को प्रतिपादित करता है। यहाँ ब्रह्म को ईश कहा गया है, जो संपूर्ण जगत का अधिष्ठाता है।

5.2 कर्म और ब्रह्म

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

द्वितीय मंत्र कर्म की अनिवार्यता को स्वीकार करता है। ईशोपनिषद कर्म को बंधन नहीं, बल्कि ईशभाव से युक्त जीवन की साधना मानता है।

5.3 विद्या-अविद्या का समन्वय

ईशोपनिषद विद्या और अविद्या–दोनों को आवश्यक मानता है। इससे स्पष्ट होता है कि ब्रह्म का स्वरूप केवल पारमार्थिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन से भी जुड़ा है।

6. शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म का स्वरूप

6.1 ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता

शंकराचार्य के अनुसार–

“ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।”

ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है।

6.2 निर्गुण ब्रह्म

अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म निर्गुण, निराकार, नित्य और अखंड चैतन्य है।

6.3 माया का सिद्धांत

माया के कारण ब्रह्म अनेक रूपों में प्रतीत होता है। वास्तव में कोई द्वैत नहीं है।

6.4 मोक्ष और ज्ञान

शंकराचार्य के अनुसार मोक्ष का एकमात्र साधन ब्रह्मज्ञान है।

7. तुलनात्मक विवेचन (Comparative Analysis)

ईशोपनिषद और आचार्य शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों की दार्शनिक आधारभूमि अद्वैत ही है, किंतु उनके प्रतिपादन का स्तर और उद्देश्य भिन्न है। ईशोपनिषद जहाँ साधक को जीवन के व्यवहारिक धरातल पर स्थित रहते हुए ब्रह्मबोध की ओर ले जाता है, वहीं शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त ब्रह्म को केवल पारमार्थिक सत्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

ईशोपनिषद ब्रह्म को ‘ईश’ के रूप में प्रस्तुत करता है—एक ऐसी सर्वव्यापक सत्ता जो जगत में व्याप्त होकर भी उससे असंग है। “ईशावास्यमिदं सर्वम्” मंत्र के माध्यम से उपनिषद यह प्रतिपादित करता है कि संपूर्ण जगत ब्रह्म से आवृत है, अतः मनुष्य को त्याग और भोग के बीच संतुलन स्थापित करते हुए कर्म करना चाहिए। यहाँ ब्रह्म और

जगत के संबंध को नकारा नहीं गया, बल्कि उसे आध्यात्मिक दृष्टि से रूपांतरित किया गया है।

इसके विपरीत, शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म और जगत के बीच पारमार्थिक स्तर पर कोई वास्तविक संबंध स्वीकार नहीं किया जाता। शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और जगत माया के कारण प्रतीत होने वाला मिथ्या रूप है। इस प्रकार जहाँ ईशोपनिषद ब्रह्म को सगुण–निर्गुण के समन्वय के रूप में प्रस्तुत करता है, वहीं शंकराचार्य ब्रह्म को निर्गुण, निराकार और निर्विशेष रूप में निरूपित करते हैं।

कर्म के संदर्भ में भी दोनों दृष्टियों में सूक्ष्म अंतर दिखाई देता है। ईशोपनिषद कर्म को मोक्षमार्ग से अलग नहीं करता, बल्कि ईशभाव से युक्त कर्म को साधना का आवश्यक अंग मानता है। इसके विपरीत, शंकराचार्य के अनुसार कर्म मोक्ष का प्रत्यक्ष साधन नहीं है, अपितु वह केवल चित्तशुद्धि का माध्यम है; मोक्ष का एकमात्र साधन ब्रह्मज्ञान है।

इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से कहा जा सकता है कि ईशोपनिषद और शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। ईशोपनिषद जहाँ साधक को व्यवहारिक जीवन से जोड़कर आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करता है, वहीं शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त उस आध्यात्मिक यात्रा का परम दार्शनिक निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

8. आलोचनात्मक विवेचन (Critical Analysis)

दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो ईशोपनिषद और शंकराचार्य के बीच विरोध नहीं, बल्कि दार्शनिक स्तरों का अंतर है।

ईशोपनिषद साधक को कर्म-प्रधान जीवन से विमुख नहीं करता, जबकि शंकराचार्य वैराग्य और ज्ञान को सर्वोच्च मानते हैं।

आलोचकों के अनुसार शंकराचार्य का अद्वैत व्यवहारिक जीवन से दूरी पैदा करता है, किंतु स्वयं शंकराचार्य कर्म को चित्तशुद्धि के लिए आवश्यक मानते हैं।

इस प्रकार आलोचनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों परंपराएँ एक-दूसरे की पूरक हैं।

9. समकालीन प्रासंगिकता (Contemporary Relevance)

आधुनिक युग में जब भौतिकवाद, उपभोक्तावाद और नैतिक संकट बढ़ रहे हैं, ईशोपनिषद का ईशावास्य दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक जीवन का आधार प्रदान करता है।

शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त वैश्विक स्तर पर एकता, अहिंसा और मानव-एकता का दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार दोनों दर्शन आज भी आध्यात्मिक और सामाजिक संदर्भों में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

10. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध-अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ईशोपनिषद और आचार्य शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त भारतीय दर्शन में ब्रह्म की अवधारणा को दो भिन्न किंतु परस्पर संबद्ध दार्शनिक स्तरों पर स्पष्ट करते हैं। दोनों परंपराओं का अंतिम लक्ष्य आत्मा-ब्रह्म की एकता का बोध कराना है, किंतु उनकी साधनात्मक और दार्शनिक पद्धति में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है।

ईशोपनिषद ब्रह्म को जीवनमूलक, नैतिक और कर्मप्रधान संदर्भ में प्रस्तुत करता है। यह उपनिषद मनुष्य को संसार से पलायन की शिक्षा नहीं देता, बल्कि ईशावास्य दृष्टि के माध्यम से संसार में रहते हुए ही ब्रह्मबोध का मार्ग प्रशस्त करता है। कर्म, त्याग और विद्या-अविद्या के समन्वय द्वारा ईशोपनिषद यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक जीवन और सामाजिक-नैतिक उत्तरदायित्व परस्पर विरोधी नहीं हैं।

दूसरी ओर, शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त ब्रह्म को पूर्णतः पारमार्थिक, निर्गुण और निर्विशेष सत्य के रूप में स्थापित करता है। उनके अनुसार अज्ञानजन्य द्वैत का नाश केवल ब्रह्मज्ञान से ही संभव है। यद्यपि शंकराचार्य ज्ञान को सर्वोच्च साधन मानते हैं, फिर भी वे कर्म और उपासना की उपयोगिता को प्रारंभिक साधना के रूप में स्वीकार करते हैं।

अतः यह स्पष्ट होता है कि ईशोपनिषद और शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त भारतीय दर्शन में ब्रह्म की अवधारणा को समग्रता, गहराई और संतुलन प्रदान करते हैं। ईशोपनिषद व्यवहारिक जीवन के लिए दार्शनिक आधार देता है, जबकि अद्वैत वेदान्त उस दर्शन की परम तात्त्विक सिद्धि को प्रतिपादित करता है। दोनों मिलकर भारतीय आध्यात्मिक चिंतन को न केवल दार्शनिक दृष्टि से समृद्ध

करते हैं, बल्कि समकालीन मानव जीवन के लिए भी अर्थपूर्ण और प्रासंगिक बनाते हैं।

संदर्भ सूची

[1] Ācārya, Śaṅkara. (1998). ईशोपनिषद भाष्य. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।

[2] Radhakrishnan, S. (1953). Indian Philosophy (Vol. 1). London: George Allen & Unwin.

[3] Dasgupta, S. (1975). A History of Indian Philosophy (Vol. 1). Cambridge: Cambridge University Press.

[4] Sharma, C. (2000). A Critical Survey of Indian Philosophy. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

[5] Hiriyanna, M. (2005). Outlines of Indian Philosophy. New Delhi: Motilal Banarsidass.

[6] Radhakrishnan, S., & Moore, C.A. (1957). A Sourcebook in Indian Philosophy. Princeton: Princeton University Press.